५. कबीर के दोहे

कविता का सारांश

कबीर के दोहों में जीवन की सच्चाइयों और नैतिक मूल्यों का सार है। उन्होंने सत्य, गुरु की महत्ता, विनम्रता, मधुर वाणी और संगति के प्रभाव पर जोर दिया है। कबीर का मानना है कि सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं और गुरु ईश्वर से भी श्रेष्ठ है। उन्होंने समझाया कि बड़ा होने का अर्थ केवल ऊँचाई नहीं, बल्कि दूसरों के लिए उपयोगी होना है। मधुर वाणी संबंधों को मधुर बनाती है। अच्छी संगति व्यक्ति को श्रेष्ठ बनाती है। आलोचक हमें सुधारने का अवसर देता है। कबीर के दोहे हमें सरल, सच्चा और संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

कठिन शब्द

- **अहित** - नुकसान, हानि, अनिष्ट, अनर्थ
- **साधु** - भला व्यक्ति, संत, महात्मा
- **संतुलन** - बराबरी, सामंजस्य, समता
- **विनम्रता** - नम्रता, नम्र स्वभाव, दीनता
- **संयम** - अपने ऊपर नियंत्रण, आत्मसंयम
- **आलोचक** - आलोचना करने वाला, समीक्षक, टीकाकार
- **महत्त्व** - गरिमा, महत्ता
- **पंथी** - यात्री, राहगीर, मुसाफिर
- **कठोर** - सख्त, रूखा कड़ा, निर्मम
- **प्रेरणा** - उत्साह दिलाना, हौसला देना, प्रोत्साहन

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाएँ। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. **"गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाँय। बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताए।।" इस दोहे में किसके विषय में बताया गया है?**
- श्रम का महत्व
- ज्ञान का महत्व ★
- गुरु का महत्व ★
- भक्ति का महत्व

2. **"अति का भला न बोलना अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना अति की भली न धूप।।" इस दोहे का मूल संदेश क्या है?**
- हमेशा चुप रहने में ही हमारी भलाई है
- हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है ★
- बारिश और धूप से बचना चाहिए
- हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए

3. **"बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।।" यह दोहा किस जीवन कौशल को विकसित करने पर बल देता है?**
- समय का सदुपयोग करना
- परिश्रम और लगन से काम करना
- दूसरों के काम आना ★
- सभी के प्रति उदार रहना

www.onepointlearning.com

4. **"ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को सीतल करे आपहुं सीतल होय।।" इस दोहे के अनुसार मधुर वाणी बोलने का सबसे बड़ा लाभ क्या है?**
- लोग हमारी प्रशंसा और सम्मान करने लगते हैं
- दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है ★
- किसी से विवाद होने पर उसमें जीत हासिल होती है
- सुनने वालों का मन इधर-उधर भटकने लगता है

5. **"साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हिरदै साँच है ता हिरदै गुरु आप।।" इस दोहे से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?**
- सत्य और झूठ में कोई अंतर नहीं होता है
- सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है ★
- बाहरी परिस्थितियाँ ही जीवन में सफलता तय करती हैं
- सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है जिससे हृदय प्रकाशित होता है ★

6. **"निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाए। बिन पानी साबुन बिना निरमल करे सुभाय।।" यहाँ जीवन में किस दृष्टिकोण को अपनाने की सलाह दी गई है?**
- आलोचना से बचना चाहिए
- आलोचकों को दूर रखना चाहिए
- आलोचकों को पास रखना चाहिए ★
- आलोचकों की निंदा करनी चाहिए

7. **"साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै थोथा देई उड़ाए।।" इस दोहे में 'सूप' किसका प्रतीक है?**
- मन की कल्पनाओं का
- सुख-सुविधाओं का
- विवेक और सूझबूझ का ★
- कठोर और क्रोधी स्वभाव का

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:

1. मैंने यह उत्तर इसलिए चुना क्योंकि दोहे में कबीरदास कहते हैं कि गुरु ने ही ईश्वर (गोविंद) से परिचय कराया। इससे गुरु की महत्ता और ज्ञान दोनों की बात स्पष्ट होती है।
2. इस दोहे में "अति" यानी किसी भी चीज़ की अधिकता को नुकसानदायक बताया गया है। संतुलित जीवन जीना ही सबसे अच्छा होता है।
3. यहाँ कबीरदास बताते हैं कि केवल ऊँचा या बड़ा होना तब तक व्यर्थ है जब तक वह दूसरों को कोई लाभ न पहुँचा सके, जैसे खजूर का पेड़ न छाया देता है, न फल आसानी से मिलता है।
4. मीठे और शांत शब्द दूसरों को भी शीतलता देते हैं और बोलने वाले को भी मानसिक संतोष मिलता है। इसलिए मैंने यह उत्तर चुना।
5. कबीर सत्य को तपस्या से भी बड़ा बताते हैं, इसलिए यह जीवन का मूल मूल्य है और जिससे मनुष्य का हृदय भी शुद्ध होता है।

www.onepointlearning.com

6. आलोचक हमारे दोष बताते हैं और हमें सुधरने का अवसर देते हैं, इसलिए उन्हें पास रखना चाहिए। यह सोचकर मैंने यह उत्तर चुना।
7. सूप जो काम का अन्न रखता है और बेकार को उड़ाता है, वह विवेक का प्रतीक है। इंसान को भी ऐसा विवेकी होना चाहिए।

मिलकर करें मिलान

(क) पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें स्तंभ 2 में दिए गए इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

क्रम	स्तंभ 1 (दोहा पंक्ति)	स्तंभ 2 (अर्थ / संदर्भ)
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।	1. सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है।
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2. बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए।
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोया।	3. गुरु शिष्य का मार्गदर्शक होता है और शिष्य गुरु का आदर करते हैं।
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4. मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है।
5.	साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5. जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है।
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावे तहाँ उड़ाय।	6. हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके।
7.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	7. विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है।
8.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	8. आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं।

उत्तर:

क्रम	स्तंभ 1 (दोहा पंक्ति)	स्तंभ 2 (अर्थ / संदर्भ)
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।	3. गुरु शिष्य का मार्गदर्शक होता है और शिष्य गुरु का आदर करते हैं
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	5. जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोया।	6. हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	8. आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं
5.	साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	7. विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावे तहाँ उड़ाय।	4. मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है
7.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	1. सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है
8.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	2. बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए

www.onepointlearning.com

(ख) नीचे स्तंभ 1 में दी गई दोहों की पंक्तियों को स्तंभ 2 में दी गई उपयुक्त पंक्तियों से जोड़िए—

क्रम	स्तंभ 1 (दोहा पंक्ति)	स्तंभ 2 (अर्थ/स्पष्टीकरण)
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।	1. बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2. औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होया।
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोया।	3. जाके हिए सांच है, ता हिए गुरु आपा।
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4. पंछी का काज नीर, फल नाहीं अति दूरा।
5.	साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5. सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय।
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावे तहां उड़ाय।	6. अति का भला न बरसना, अति की भली न धूपा।
7.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	7. जो जैसी संगति करे, सो तैसा ही फल पाय।
8.	सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	8. बलिहारी गुरु अपने, गोविंद दियो बताए।

उत्तर:

क्रम	स्तंभ 1 (दोहा पंक्ति)	स्तंभ 2 (अर्थ/स्पष्टीकरण)
1.	**गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।**	8. बलिहारी गुरु अपने, गोविंद दियो बताए।
2.	**अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।**	6. अति का भला न बरसना, अति की भली न धूपा।
3.	**ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोया।**	2. औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होया।
4.	**निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।**	1. बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।
5.	**साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।**	5. सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय।
6.	**कबिरा मन पंछी भया, भावे तहां उड़ाय।**	4. पंछी का काज नीर, फल नाहीं अति दूरा।
7.	**बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।**	3. जाके हिए सांच है, ता हिए गुरु आपा।
8.	**सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।**	7. जो जैसी संगति करे, सो तैसा ही फल पाय।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "कबिरा मन पंछी भया भावै तहवाँ जाय, जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय"

उत्तर:

अर्थ: कबीरदास कहते हैं कि मन चंचल पक्षी के समान है, जो जहाँ चाहे उड़ जाता है। इसलिए अगर मन को बुरी संगति मिलती है तो वह गलत दिशा में चला जाता है, और अच्छी संगति मिलती है तो सही राह पर चलता है। संगति का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है – जैसे संगति, वैसा परिणाम।

मेरे विचार: मुझे लगता है कि यह पंक्ति हमें यह सिखाती है कि हमें अपने दोस्तों और संगत का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। अच्छी संगति हमें सुधारती है और बुरी संगति हमें गलत रास्ते पर ले जा सकती है। मैं कोशिश करूँगा कि मैं हमेशा ऐसे लोगों के साथ रहूँ जो मुझे सकारात्मक सोच और अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करें।

(ख) "साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप, जाके हिरदै साँच है ता हिरदै गुरु आप"

उत्तर:

अर्थ: सत्य बोलना और उस पर चलना सबसे बड़ा तप (साधना) है। झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है। जिस व्यक्ति के हृदय में सच्चाई बसती है, उसी का हृदय उसका मार्गदर्शक (गुरु) बन जाता है।

मेरे विचार: मुझे लगता है कि यह दोहा हमें जीवन में सत्य के महत्व को समझाता है। जब हम सच्चाई के रास्ते पर चलते हैं, तो हमें किसी से डरने की जरूरत नहीं होती। अगर हमारे मन में सच्चाई है, तो हमें सही और गलत की पहचान खुद हो जाती है। मैं यह सीख अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करूँगा।

सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।" इस दोहे में गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान दिया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर: हाँ, मैं इससे सहमत हूँ। इस दोहे में कबीरदास जी ने गुरु की महिमा को ईश्वर से भी बढ़कर बताया है। गुरु ही वह माध्यम है जो हमें अज्ञानता के अंधकार से निकालकर ज्ञान की ओर ले जाता है और हमें ईश्वर का मार्ग दिखाता है। गुरु के बिना ईश्वर को जानना संभव नहीं है। इसलिए, गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है क्योंकि गुरु ही हमें ईश्वर तक पहुँचाते हैं।

(ख) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूरा।" इस दोहे में कहा गया है कि सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में और कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? अपने विचार साझा कीजिए।

उत्तर: सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में परोपकार, विनम्रता, दूसरों के प्रति दया और मदद करने की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार खजूर का पेड़ बहुत बड़ा होता है, लेकिन न तो वह किसी को छाया दे पाता है और न ही उसके फल आसानी से तोड़े जा सकते हैं, उसी प्रकार एक बड़ा और संपन्न व्यक्ति यदि दूसरों के काम न आए तो उसकी बड़ाई व्यर्थ है। इसलिए, मनुष्य को अपनी बड़ाई के साथ-साथ दूसरों की सहायता करने वाला और विनम्र भी होना चाहिए।

(ग) "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।" क्या आप मानते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं स्वयं पर भी पड़ता है? आपके बोले गए शब्दों ने आपके या किसी अन्य के स्वभाव या मनोदशा को कैसे परिवर्तित किया? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर: हाँ, मैं मानता हूँ कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं, बल्कि स्वयं पर भी पड़ता है। जब हम मधुर और सकारात्मक शब्द बोलते हैं तो हमारे मन में भी शांति और प्रसन्नता का अनुभव होता है। उदाहरण के लिए, जब मैंने अपने किसी मित्र को उसके काम के लिए "बहुत बढ़िया" या "शाबाश" कहा, तो उस प्रशंसा को सुनकर मेरा मन भी खुशी से भर गया। इसी तरह, यदि हम क्रोध में किसी को बुरा-भला कहते हैं, तो हमारा अपना मन भी अशांत और परेशान हो जाता है। अतः, हमारे शब्द हमारी अपनी मनोदशा को भी प्रभावित करते हैं।

(घ) "जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय।" हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर: हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का गहरा प्रभाव पड़ता है। हम जिस प्रकार के लोगों के साथ रहते हैं, धीरे-धीरे हम उनके जैसे ही बन जाते हैं। यदि हम अच्छे, सज्जन और मेहनती लोगों के साथ रहते हैं, तो हमारे विचार भी सकारात्मक और अच्छे होते हैं और हम भी उनके जैसा बनने का प्रयास करते हैं। इसके विपरीत, यदि हम बुरे, आलसी और नकारात्मक लोगों के साथ रहते हैं, तो हम भी उन्हीं की तरह सोचने और काम करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक छात्र जो बहुत मेहनती है, उन छात्रों के साथ रहने लगे जो पढ़ाई में रुचि नहीं रखते, तो धीरे-धीरे वह भी अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना कम कर देगा। इस प्रकार, संगति हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करती है।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

दोहे की रचना

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

इन दोनों पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों के दो-दो भाग दिखाई दे रहे हैं। इन चारों भागों का पहला शब्द है 'अति'। इस कारण इस दोहे में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न हो गया है। आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी कई विशेषताएँ दिखाई देंगी, जैसे—दोहों की प्रत्येक पंक्ति को बोलने में एक-समान समय लगता है। अपने-अपने समूह में मिलकर पाठ में दिए गए दोहों की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(क) दोहों की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें—

1. **एक ही अक्षर से प्रारंभ होने वाले (जैसे— राजा, रस्सी, रात) दो या दो से अधिक शब्द एक साथ आए हैं।**
   उत्तर: उदाहरण - "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।"
   → 'कबिरा', 'कबीर'; 'भावै', 'भया' – 'भ' अक्षर से शुरू होने वाले शब्द।
2. **एक शब्द एक साथ दो बार आया है। (जैसे— बार-बार)**
   उत्तर: उदाहरण - "सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।"
   → 'सार-सार' — एक ही शब्द दो बार प्रयोग।
3. **लगभग एक जैसे शब्द, जिनमें केवल एक मात्रा भर का अंतर है (जैसे— जल, जाल) एक ही पंक्ति में आए हैं।**
   उत्तर: उदाहरण - "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।"
   → साँच और झूठ – दोनों सत्य-असत्य से संबंधित हैं, स्वर-मात्रा अलग है।
4. **एक ही पंक्ति में विपरीतार्थक शब्दों (जैसे— अच्छा-बुरा) का प्रयोग किया गया है।**
   उत्तर: उदाहरण - "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।"
   → साँच (सत्य) और झूठ — एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्द।
5. **किसी की तुलना किसी अन्य से की गई है। (जैसे— दूध जैसा सफेद)**
   उत्तर: उदाहरण - "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।"
   → यहाँ बड़े व्यक्ति की तुलना खजूर के पेड़ से की गई है।
6. **किसी को कोई अन्य नाम दे दिया गया है। (जैसे— मुख चंद्र है)**
   उत्तर: उदाहरण - "जाके हिए साँच है, ता हिए गुरु आपा।"
   → हृदय को गुरु कहा गया है – यह रूपक अलंकार है।
7. **किसी शब्द की वर्तनी थोड़ी अलग है। (जैसे— 'चुप' के स्थान पर 'चूप')**
   उत्तर: उदाहरण - "अति का भला न चूप।"
   → 'चूप' = 'चुप' की वैकल्पिक वर्तनी — लोकभाषा का प्रयोग।
8. **उदाहरण द्वारा कही गई बात को समझाया गया है।**
   उत्तर: उदाहरण - "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
   पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।"
   → यहाँ उदाहरण देकर समझाया गया कि केवल ऊँचाई (बड़प्पन) का कोई लाभ नहीं जब तक वह दूसरों के काम न आए।

www.onepointlearning.com

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर:

- कबीर के दोहे लयबद्ध, समान लंबाई वाले और गहरे अर्थ वाले होते हैं।
- हर दोहे की दो पंक्तियाँ होती हैं, जिनमें विचार गहराई से व्यक्त होता है।
- अलंकारों (रूपक, उपमा, पुनरुक्ति, विरोधाभास) का सुंदर प्रयोग होता है।
- कबीर सटीक उदाहरणों और तुलनाओं से बात को स्पष्ट करते हैं।
- शब्दों की पुनरावृत्ति और मात्रा की समानता से लयात्मकता आती है।
- इन दोहों में जनभाषा (लोक भाषा) और सरल शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँया"

- **यदि आपके सामने यह स्थिति होती तो आप क्या निर्णय लेते और क्यों?**
  उत्तर: मैं पहले गुरु के चरणों में प्रणाम करता क्योंकि गुरु ने ही मुझे ईश्वर (गोविंद) के बारे में जानने की राह दिखाई है। बिना गुरु के, ईश्वर तक पहुँचना संभव नहीं।
- **यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक न होता तो क्या होता?**
  उत्तर: तब समाज में ज्ञान, संस्कार और सही-गलत की पहचान का अभाव हो जाता। जीवन दिशाहीन हो जाता और लोग केवल अनुभवों से ही सीख पाते, जिससे अनेक भूलें होतीं।

(ख) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप"

- **यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक बोलता है या बहुत चुप रहता है तो उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?**
  उत्तर: बहुत बोलने वाला व्यक्ति दूसरों को थका सकता है और कभी-कभी अनजाने में गलतियाँ कर बैठता है। बहुत चुप रहने वाला अपने मन की बात नहीं कह पाता, जिससे वह अकेला पड़ सकता है।
- **यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक या कम हो तो क्या परिणाम हो सकते हैं?**
  उत्तर: अधिक वर्षा से बाढ़, फसल बर्बादी और जन-धन की हानि हो सकती है। बहुत कम वर्षा से सूखा, जल संकट और अकाल जैसे हालात हो सकते हैं।
- **आवश्यकता से अधिक मोबाइल या मल्टीमीडिया का प्रयोग करने से क्या परिणाम हो सकते हैं?**
  उत्तर: इससे आँखों और दिमाग पर बुरा प्रभाव पड़ता है। पढ़ाई में ध्यान नहीं लगता, नींद में कमी होती है, और रिश्तों में दूरी आ सकती है।

(ग) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप"

- **झूठ बोलने पर आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?**
  उत्तर: एक बार झूठ बोलने पर बार-बार झूठ बोलना पड़ता है। आत्मविश्वास कम होता है और लोग भरोसा करना छोड़ देते हैं।
- **कल्पना कीजिए कि आपके शिक्षक ने आपको किसी गलत उत्तर के लिए अंक दे दिए हैं, ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे?**
  उत्तर: मैं उन्हें विनम्रता से बताऊँगा कि मेरा उत्तर गलत है। ऐसा करने से मेरे अंदर ईमानदारी की भावना बनी रहेगी और शिक्षक भी मेरी सत्यनिष्ठा की सराहना करेंगे।

www.onepointlearning.com

(घ) "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय"

- **यदि सभी मनुष्य अपनी वाणी को मधुर और शांति देने वाली बना लें तो लोगों में क्या परिवर्तन आ सकता है?**
  उत्तर: समाज में शांति, प्रेम और सहयोग की भावना बढ़ेगी। विवाद कम होंगे और रिश्ते मजबूत बनेंगे।
- **क्या कोई ऐसी परिस्थिति हो सकती है जहाँ कटु वचन बोलना आवश्यक हो? अनुमान लगाइए।**
  उत्तर: हाँ, जब कोई व्यक्ति बार-बार गलती करे या किसी को गलत राह से रोकना हो, तब सख्त या कटु वचन ज़रूरी हो सकते हैं — परंतु उनका उद्देश्य सुधार होना चाहिए, अपमान नहीं।

(ङ) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूरा"

- **यदि कोई व्यक्ति अपने बड़े होने का अहंकार रखता हो तो आप इस दोहे का उपयोग करते हुए, उसे 'बड़े होने या संपन्न होने' का क्या अर्थ बताएँगी या समझाएँगे?**
  उत्तर: मैं उसे समझाऊँगा कि केवल ऊँचाई या पद से कोई महान नहीं होता, बल्कि जब हम दूसरों के काम आते हैं, तभी हमारी महानता सच्ची होती है।
- **खजूर, नारियल आदि ऊँचे वृक्ष अनुपयोगी नहीं होते हैं। वे किस प्रकार से उपयोगी हो सकते हैं? बताइए।**
  उत्तर: खजूर: इसका फल मीठा होता है, ऊर्जा देता है।
- नारियल: पानी, गूदा, तेल और छिलके सभी उपयोगी हैं — यह संपूर्ण रूप से लाभकारी वृक्ष है।
- **आप अपनी कक्षा का कक्षा नायक या नायिका (मॉनिटर) चुनने के लिए किसी विद्यार्थी की किन-किन विशेषताओं पर ध्यान देंगे?**
  उत्तर: कक्षा नायक/नायिका चुनने की विशेषताएँ:
  - ईमानदार
  - सभी के प्रति समान व्यवहार
  - निर्णय लेने में सक्षम
  - जिम्मेदार
  - संयमी और विनम्र

(च) "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय"

- **यदि कोई आपकी गलतियों को बताता रहे तो आपको उससे क्या लाभ होगा?**
  उत्तर: हमें अपनी कमियाँ सुधारने का अवसर मिलता है। हम बेहतर इंसान बनते हैं।
- **यदि समाज में कोई भी एक-दूसरे की गलतियाँ न बताए तो क्या होगा?**
  उत्तर: लोग अपनी गलतियों को नहीं पहचान पाएँगे और समाज में अराजकता, अहंकार और भ्रष्टता फैल सकती है।

(छ) "साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय"

- **कल्पना कीजिए कि आपके पास 'सूप' जैसी विशेषता है तो आपके जीवन में कौन-कौन से परिवर्तन आएँगे?**
  उत्तर: मैं हर बात को सोच-समझकर अपनाऊँगा, सार्थक बातों को अपनाकर व्यर्थ को छोड़ पाऊँगा। इससे मेरे निर्णय बेहतर होंगे।
- **यदि हम बिना सोचे-समझे हर बात को स्वीकार कर लें तो उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?**
  उत्तर: भ्रम और गलतफहमियाँ बढ़ेंगी। हम सही और गलत की पहचान नहीं कर पाएँगे, जिससे नुकसान हो सकता है।

(ज) "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाया"

- **यदि मन एक पंछी की तरह उड़ सकता तो आप उसे कहाँ ले जाना चाहते और क्यों?**
  उत्तर: मैं उसे प्रकृति, ज्ञान, शांति और सच्चे प्रेम की ओर ले जाना चाहूँगा — जहाँ स्वार्थ न हो और सभी सुखी हों।
- **संगति का हमारे जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ सकता है?**
  उत्तर: संगति व्यक्ति के सोच, आचरण और जीवन दिशा को प्रभावित करती है। अच्छी संगति से सफलता मिलती है और बुरी संगति से पतन होता है।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

वाद-विवाद

"अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

(क) इस दोहे का आज के समय में क्या महत्त्व है? इसके बारे में कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। एक समूह के साथी इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे और दूसरे समूह के साथी इसके विपक्ष में बोलेंगे। एक तीसरा समूह निर्णायक बन सकता है।

उत्तर: इस दोहे में कबीरदास जी यह समझा रहे हैं कि किसी भी चीज़ की अति (अधिकता) अच्छी नहीं होती। आज के समय में जब लोग या तो बहुत बोलते हैं या बहुत ही चुप रहते हैं, जब मौसम या भावनाएँ संतुलन खो देती हैं, तब यह दोहा जीवन का एक गहरा सत्य बन जाता है।

इसलिए, यह दोहा आज भी अत्यंत प्रासंगिक है — चाहे वह बोलने का तरीका हो, तकनीक का प्रयोग, वर्षा, या व्यवहार — संतुलन सबसे जरूरी है।

(ख) पक्ष और विपक्ष के समूह अपने-अपने मत के लिए तर्क प्रस्तुत करेंगे, जैसे—

- **पक्ष – वाणी पर संयम रखना आवश्यक है।**

  उत्तर:

क्रम	तर्क
1.	अधिक बोलने से रिश्तों में तनाव आ सकता है।
2.	चुप रहकर भी हम अपनी बात न कह पाने से नुकसान उठा सकते हैं। इसलिए संयम जरूरी है।
3.	मौसम में अधिक बरसात हो या अधिक धूप – दोनों ही हानिकारक हैं।
4.	तकनीक का अत्यधिक प्रयोग (मोबाइल, गेम आदि) मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है।
5.	जीवन का हर क्षेत्र – पढ़ाई, खेल, नींद, खाना – सब में संतुलन जरूरी है।
6.	अति से तनाव, रोग, असंतोष और पछतावा होता है।

- **विपक्ष – अत्यधिक चुप रहना भी उचित नहीं है।**

  उत्तर:

  1. कुछ अवसरों पर अधिक बोलना (जैसे – अन्याय के खिलाफ) ज़रूरी होता है।
  2. गहन चिंतन और आत्ममंथन के लिए मौन या अधिक चुप रहना आवश्यक हो सकता है।
  3. किसी विषय में अधिक मेहनत या अभ्यास करने से ही सफलता मिलती है।
  4. अधिक बारिश से बाँध और नदियाँ भर जाती हैं, जो खेती के लिए लाभदायक होता है।
  5. कभी-कभी जुनून और अति प्रयास ही सफलता की कुंजी बनते हैं।
  6. देश, समाज और प्रकृति में कई बार 'अत्यधिक' परिवर्तन ही क्रांति लाते हैं।

(ग) पक्ष और विपक्ष में प्रस्तुत तर्कों की सूची अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख लीजिए।

उत्तर: वाद-विवाद विषय - "क्या 'अति' जीवन में हानिकारक है?"

- **पक्ष के तर्क (अति हानिकारक है):**
  - जीवन में संतुलन बनाए रखना जरूरी है।
  - अधिक बोलने से झगड़े हो सकते हैं।

- अधिक वर्षा या धूप से हानि होती है।
- बहुत ज़्यादा मोबाइल या टीवी देखने से नुकसान होता है।
- संयम से मन, शरीर और समाज सब स्वस्थ रहते हैं।

- **विपक्ष के तर्क (अति ज़रूरी हो सकती है):**
  - अन्याय के विरोध में बोलना पड़ता है।
  - कुछ लोग मौन से भी ज्ञान प्राप्त करते हैं।
  - अति परिश्रम सफलता की कुंजी हो सकती है।
  - वर्षा की अधिकता कभी-कभी ज़रूरी होती है।
  - कुछ कार्यों में जोश और उत्साह की 'अति' प्रेरक होती है।

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में कबीर से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए—

उत्तर:

1. बानी – दोहे, साखी
2. जन्मस्थान – काशी
3. समय – चौदहवीं शताब्दी
4. रचना-संग्रह – कबीर ग्रंथावली
5. पेशा – करघा बुनना (बुनकर)
6. प्रेरणा – जीवन की सच्चाई और अच्छा मनुष्य बनना

दोहे और कहावतें

"कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाया
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाया।।"

इस दोहे को पढ़कर ऐसा लगता है कि यह बात तो हमने पहले भी अनेक बार सुनी है। यह दोहा इतना अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय है कि इसकी दूसरी पंक्ति लोगों के बीच कहावत—'जैसा संग वैसा रंग' (व्यक्ति जिस संगति में रहता है, वैसा ही उसका व्यवहार और स्वभाव बन जाता है।) की तरह प्रयुक्त होती है। कहावतें ऐसे वाक्य होते हैं जिन्हें लोग अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। इसमें सामान्यतः जीवन के गहरे अनुभव को सरल और संक्षेप में बता दिया जाता है।

अब आप ऐसी अन्य कहावतों का प्रयोग करते हुए अपने मन से कुछ वाक्य बनाकर लिखिए।

उत्तर: कहावतें और वाक्य -

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

1. जैसा बोओगे वैसा काटोगे
→ यदि हम मेहनत करेंगे तो सफलता जरूर मिलेगी, आखिर जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
2. नाच न जाने आँगन टेढ़ा
→ अपनी गलती मानने के बजाय वह बहाने बना रहा था, जैसे नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
3. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
→ बड़े काम को सफल बनाने के लिए सभी का सहयोग जरूरी है, क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
4. कर भला तो हो भला
→ दूसरों की मदद करने से हमें भी खुशी और सम्मान मिलता है, कर भला तो हो भला।
5. जैसा देश वैसा भेष
→ विदेश यात्रा पर जाते समय वहाँ की संस्कृति को अपनाना चाहिए, जैसा देश वैसा भेष।
6. लोहे को लोहे से काटना
→ गलत लोगों को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने पड़ते हैं, लोहे को लोहे से काटना।
7. बूँद-बूँद से घड़ा भरता है
→ रोज थोड़ा-थोड़ा पढ़ने से भी परीक्षा में अच्छे अंक आ सकते हैं, बूँद-बूँद से घड़ा भरता है।

सबकी प्रस्तुति

पाठ के किसी एक दोहे को चुनकर अपने समूह के साथ मिलकर भिन्न-भिन्न प्रकार से कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए। उदाहरण के लिए—

चुना गया दोहा: "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहुं सीतल होय।।"

- **गायन करना, जैसे लोकगीत शैली में।**

  उत्तर:
  - दोहे को सरल लोकधुन में गाकर प्रस्तुत करें।
  - हारमोनियम, ढोलक या ताली का साथ लें।
  - गाते समय पंक्तियों के भाव को चेहरे के भावों से भी दिखाएँ।
- **भाव-नृत्य प्रस्तुति।**

  उत्तर:
  - मंच पर दो सदस्य नृत्य के माध्यम से "मधुर वाणी" का असर दिखाएँ।
  - एक पात्र क्रोध में कुछ कहता है, दूसरा पात्र धीरे-धीरे प्रेमपूर्वक उत्तर देता है।
  - नृत्य में हाथ के इशारे और चेहरे के भाव से संदेश स्पष्ट करें।
- **कविता पाठ करना।**
- **उत्तर:**
  - दोहे को स्पष्ट उच्चारण और भावपूर्ण स्वर में सुनाएँ।
  - बीच-बीच में दोहे का अर्थ भी समझाएँ।
  - अंत में दर्शकों से प्रश्न पूछकर उनसे भी विचार साझा करवाएँ।
- **संगीत के साथ प्रस्तुत करना।**
- **उत्तर:**
  - पृष्ठभूमि में हल्का संगीत (तबला/गिटार/बांसुरी) बजाएँ।
  - एक व्यक्ति दोहा पढ़े और बाकी समूह "सीतल होय" पंक्ति पर कोरस में गाएँ।

www.onepointlearning.com

- **अभिनय करना, जैसे एक दोस्त गुस्से में आकर कुछ गलत कह देता है लेकिन दूसरा दोस्त उसे समझाता है कि मधुर भाषा का कितना प्रभाव पड़ता है। (ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय)**
- **उत्तर:** कथानक **-**
  - दृश्य 1: दो दोस्त खेल रहे हैं। एक गलती से दूसरे का खिलौना तोड़ देता है।
  - दृश्य 2: खिलौने का मालिक गुस्से में डाँटता है।
  - दृश्य 3: तीसरा दोस्त दोनों को समझाता है – "ऐसी बानी बोलिए..."
  - दृश्य 4: दोनों एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक बात करते हैं और गले मिलते हैं।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।" क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने आपको सही दिशा दिखाने में सहायता की हो? उस व्यक्ति के बारे में बताइए।

उत्तर: हाँ, मेरे जीवन में मेरी हिंदी शिक्षिका ने मुझे सही दिशा दिखाने में बहुत मदद की है। जब मैं कविता पाठ में हिचकिचाता था, उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और मंच पर बोलने का आत्मविश्वास दिया। उन्होंने केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि अच्छे आचरण और मेहनत के महत्व को भी समझाया। आज भी जब कोई कठिनाई आती है, तो उनकी बातें मुझे राह दिखाती हैं।

(ख) "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।" क्या कभी किसी ने आपकी कमियों या गलतियों के विषय में बताया है जिनमें आपको सुधार करने का अवसर मिला हो? उस अनुभव को साझा कीजिए।

उत्तर: एक बार कक्षा में प्रोजेक्ट प्रस्तुत करते समय मेरे एक मित्र ने कहा कि मैं बहुत तेज़ बोल रहा हूँ और स्लाइड बदलने में जल्दबाज़ी कर रहा हूँ। पहले मुझे थोड़ा बुरा लगा, लेकिन बाद में मैंने महसूस किया कि यह सही था। अगली प्रस्तुति में मैंने बोलने की गति धीमी की और दर्शकों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उस अनुभव से मैंने सीखा कि आलोचना को अपनाने से हम और बेहतर बनते हैं।

(ग) "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।" क्या आपने कभी अनुभव किया है कि आपकी संगति (जैसे—मित्र) आपके विचारों और आदतों या व्यवहारों को प्रभावित करती है? अपने अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर: हाँ, मैंने देखा है कि मेरी संगति मेरे विचार और आदतों को बहुत प्रभावित करती है। जब मैं उन दोस्तों के साथ समय बिताता हूँ जो पढ़ाई और खेल में संतुलन रखते हैं, तो मैं भी प्रेरित होकर मेहनत करता हूँ। लेकिन जब मैं ऐसे दोस्तों के साथ ज्यादा समय बिताता हूँ जो सिर्फ मोबाइल पर खेलते हैं, तो मेरा ध्यान पढ़ाई से भटक जाता है। इसलिए अब मैं अच्छी संगति चुनने की कोशिश करता हूँ।

सृजन

(क) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप"

इस दोहे पर आधारित एक कहानी लिखिए जिसमें किसी व्यक्ति ने कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। (संकेत—किसी खेल में आपकी टीम द्वारा नियमों के उल्लंघन का आपके द्वारा विरोध किया जाना)

उत्तर: कहानी — "सत्य की जीत"

दोहे पर आधारित - "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप"

वार्षिक खेल प्रतियोगिता में हमारी कक्षा का फुटबॉल मैच फाइनल में पहुँचा। खेल के अंतिम मिनट में हमारी टीम ने एक गोल किया, लेकिन मैंने साफ़ देखा कि गेंद को गोल लाइन पार करने से पहले ही हमारे खिलाड़ी ने हाथ से छुआ था, जो नियमों के

विरुद्ध था। रेफरी ने गोल मान लिया, और हमारी टीम को जीत घोषित करने वाली थी। मैं दुविधा में था—अगर सच बोलूँगा तो हम हार सकते हैं, और अगर चुप रहूँगा तो यह जीत हमारे नाम हो जाएगी। लेकिन मुझे कबीरदास जी का यह दोहा याद आया—"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप"।

मैंने हिम्मत करके रेफरी को सच्चाई बता दी। गोल रद्द हुआ, और हम मैच हार गए। शुरू में टीम के कुछ साथी नाराज़ हुए, लेकिन बाद में उन्होंने भी माना कि ईमानदारी ही असली जीत है। उस दिन मुझे सिख मिला कि कठिन परिस्थिति में भी सच का साथ देना सबसे बड़ा साहस है।

(ख) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँया"
इस दोहे को ध्यान में रखते हुए अपने किसी प्रेरणादायक शिक्षक से साक्षात्कार कीजिए और उनके योगदान पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर: निबंध — "मेरे प्रेरणादायक शिक्षक"

दोहे पर आधारित - "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँया"

मेरे जीवन में कई शिक्षक आए, लेकिन मेरी विज्ञान शिक्षिका, श्रीमती सीमा मैडम, मेरे लिए सबसे प्रेरणादायक हैं। उन्होंने मुझे केवल किताबों का ज्ञान नहीं दिया, बल्कि जीवन में ईमानदारी, समय का सदुपयोग और मेहनत का महत्व भी सिखाया।

जब मैं कक्षा 7 में था, तब विज्ञान में मेरे अंक कम आने लगे थे। निराश होकर मैंने पढ़ाई छोड़ने का मन बना लिया। सीमा मैडम ने मुझे अलग से समय देकर कठिन विषयों को सरल तरीके से समझाया। वे मुझे प्रयोगों के माध्यम से पढ़ातीं, जिससे मेरा विज्ञान में रुचि बढ़ी।

एक बार मैंने उनसे पूछा कि वे इतनी मेहनत क्यों करती हैं। उन्होंने मुस्कुराकर कहा—"शिक्षक का काम केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि हर विद्यार्थी के भीतर छिपी क्षमता को पहचानकर उसे सही दिशा में ले जाना है।"

आज मैं आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहा हूँ, तो इसका सबसे बड़ा श्रेय मेरी गुरु, सीमा मैडम को जाता है। सचमुच, कबीरदास जी ने सही कहा है—गुरु का स्थान भगवान से भी ऊँचा है, क्योंकि वही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं।

कबीर हमारे समय में

(क) कल्पना कीजिए कि कबीर आज के समय में आ गए हैं। वे आज किन-किन विषयों पर कविता लिख सकते हैं? उन विषयों की सूची बनाइए।

उत्तर: अगर कबीर आज के समय में आते तो वे इन विषयों पर लिख सकते:

- मोबाइल और सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग
- पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण
- शिक्षा में ईमानदारी
- जाति, धर्म और भेदभाव से मुक्ति
- राजनीति में सच्चाई और सेवा भाव
- उपभोक्तावाद और फिजूलखर्ची
- पानी और संसाधनों का संरक्षण
- मित्रता और सही संगति
- स्वास्थ्य और संतुलित जीवन
- तकनीक का सही उपयोग

(ख) इन विषयों पर आप भी दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर: दो-दो पंक्तियाँ (कबीर-शैली में)-

1. **मोबाइल और सोशल मीडिया**
   मोबाइल जाल बिछा गया, मनवा उलझा जाय,
   संगत सच्ची छोड़ के, आभासी में रहि जाय।।
2. **पर्यावरण संरक्षण**
   पेड़ न काटो मनुष्य रे, छाँव न फिर मिलि पाय,
   सांसों का यह धन है, जीवन साथ निभाय।।
3. **शिक्षा में ईमानदारी**
   नकल से मिली डिग्री, ज्ञान न भीतर जाय,

साँच पढ़ाई कर ले रे, जीवन सफल बनाय।।

4. **भेदभाव से मुक्ति**

जाति-पांति पूछे नहीं, मन का देखे रंग,
एक ही माटी के बने, सबका एक ही ढंग।।

5. **पानी संरक्षण**

बूँद-बूँद कर जो बचाए, जीवन वह पा जाय,
व्यर्थ बहाने वाला, प्यासा ही रहि जाय।।

साइबर सुरक्षा और दोहे

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में विचार-विमर्श कीजिए और साझा कीजिए—

(क) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।" इंटरनेट पर अनावश्यक सूचनाएँ साझा करने का क्या-क्या संकट हो सकते हैं?

उत्तर: इंटरनेट पर बहुत अधिक या अनावश्यक जानकारी साझा करने से कई खतरे हो सकते हैं:

- **गोपनीयता का खतरा –** निजी जानकारी गलत लोगों के हाथ लग सकती है।
- **साइबर अपराध –** बैंकिंग विवरण, पासवर्ड या लोकेशन बताने से धोखाधड़ी हो सकती है।
- **छवि को नुकसान –** गलत या विवादास्पद पोस्ट से सामाजिक प्रतिष्ठा घट सकती है।
- **सुरक्षा खतरे –** पते या यात्रा की जानकारी साझा करने से अपराधी फायदा उठा सकते हैं।
- **गलत लोगों का ध्यान आकर्षित होना –** व्यक्तिगत फोटो/वीडियो का दुरुपयोग हो सकता है।

(ख) "साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।" किसी भी वेबसाइट, ईमेल या मीडिया पर उपलब्ध जानकारी को 'सूप' की तरह छानने की आवश्यकता क्यों है? कैसे तय करें कि कौन-सी सूचना उपयोगी है और कौन-सी हानिकारक है?

उत्तर: ऑनलाइन उपलब्ध हर जानकारी सही नहीं होती। जैसे सूप भूसी (थोथा) उड़ा देता है और दाना (सार) रखता है, वैसे ही हमें इंटरनेट से सिर्फ उपयोगी और सही जानकारी लेनी चाहिए।

कारण:

- इंटरनेट पर अफवाहें, फेक न्यूज़ और भ्रामक सूचनाएँ बहुत होती हैं।
- गलत जानकारी से निर्णय और सोच दोनों प्रभावित हो सकते हैं।
- हानिकारक वेबसाइटें वायरस या मैलवेयर फैला सकती हैं।

कैसे तय करें कि जानकारी उपयोगी है या हानिकारक:

- भरोसेमंद स्रोत (जैसे सरकारी, शैक्षणिक, प्रमाणित वेबसाइट) देखें।
- एक ही जानकारी को अलग-अलग स्रोतों से मिलाएँ।
- तारीख देखें – पुरानी या अप्रासंगिक जानकारी न अपनाएँ।
- बिना प्रमाण वाली सनसनीखेज बातों से बचें।
- संदिग्ध लिंक या अज्ञात ईमेल न खोलें।

आज के समय में

नीचे कुछ घटनाएँ दी गई हैं इन्हें पढ़कर आपको कबीर के कौन-से दोहे याद आते हैं? घटनाओं के नीचे दिए गए रिक्त स्थान पर उन दोहों को लिखिए—

- **अमित का मन पढ़ाई में नहीं लगता था और वह गलत संगति में चला गया। कुछ समय बाद जब उसके अंक कम आए तो उसे समझ में आया – "संगति का असर जीवन पर पड़ता है।"**

  उत्तर: "कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।

जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।"

- **एक विद्यार्थी इंटरनेट पर लगातार सूचनाएँ खोज रहा था। उसके पिता ने कहा — "हर जानकारी सही नहीं होती, सही बातों को चुनो और बेकार छोड़ दो।"**

  उत्तर: "साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
  सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।।"

- **आपका एक मित्र आपकी किसी गलत बात पर आपकी आलोचना करता है। आप पहले परेशान होते हैं, लेकिन फिर आपने सोचा — "आलोचना मुझे सुधरने का मौका देती है, मुझे इन बातों को बुरा नहीं मानना चाहिए इसे सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।"**

  उत्तर: "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
  बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।"

- **रीमा ने अपने गुस्से में सहकर्मियों को बुरा-भला कह दिया, जिससे वातावरण बिगड़ गया। बाद में उसने समझा कि अगर वह शांति से बात करती तो समस्या हल हो जाती।**

  उत्तर: "ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
  औरन को सीतल करे, आपहुं सीतल होय।।"

- **कक्षा में मोहन ने बहुत अधिक बोलकर सबको परेशान कर दिया, जबकि रमेश बिल्कुल चुप रहा। गुरुजी ने कहा — "बोलचाल में संतुलन आवश्यक है, न अधिक बोलो, न अधिक चुप रहो।"**

  उत्तर: "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
  अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

- **सुरेश को जब 'प्रतिभा सम्मान' मिला तो उसने कहा — "इसमें मेरे परिश्रम के साथ मेरे गुरुजनों का मार्गदर्शन भी सम्मिलित है।"**

  उत्तर: "गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
  बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"

www.onepointlearning.com